[श्री महेश्वर सिंह]

हो गए, उपजाऊ भूमि बह गई, सड़कें टूट गयीं, पेयजल योजनाएं, सिंचाई योजनाएं सारी नष्ट हो गयीं। विशेषकर चंबा, कूल्लू, उना और किन्नौर जिलों में तो तबाही मच गई। अभी तक की सूचना के अनुसार 120 लोगों की जानें गयीं, 980 पशु मर गए और 6,941 से भी अधिक घर गिर गए हैं।

महोदय, 11 जुलाई को कुल्लू में एक साट नामक गांव में ही बादल फटने से अकेले 27 लोगों की मृत्यु उसी घटना-स्थल पर हो गई और 2 महिलाएं व्यास नदी में बह गयीं। ठीक एक मास के बाद पुनः उसी कुल्लू जिले के फोजल नामक स्थान पर फिर बादल फटा और 11 लोगों की जानें उसी घटना-स्थल पर चली गयीं।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे खेद के साथ यह कहना पड़ता है कि प्रभावित व्यक्तियों को वहां की सरकार समय पर समुचित राहत पहुंचाने में असफल रही है। उसका एक कारण यह भी है कि हिमाचल प्रदेश आर्थिक संकट में डूबा है और हिमाचल प्रदेश जैसे प्रदेश के लिए, जो कि केन्द्र पर आर्थिक सहायता के लिए निर्भर है, समुचित राहत राशि प्रदान करना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है। दूसरी ओर प्रधानमंत्री महोदय ने यह घोषणा की है कि जो लोग मर गए हैं, उनके आश्रितों को 50,000/- रुपए प्रति मृतक प्रदान की जाएगी।

उपाध्यक्ष महोदय, अगर कुल मृतक संख्या देखी जाए तो 120 लोग मरे हैं और अभी तक जो राहत राशि यहां से गयी है वह केवल 42 लाख रुपए गई है। अब अगर इसको 50 हजार के हिसाब से बांटें तो यह भी पर्याप्त नहीं है। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से यह मांग करना चाहूंगा कि हिमाचल प्रदेश को अधिक धनराशि प्रदान की जाए।

उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक 9वें वित्त आयोग का संबंध है, उसकी सिफारिशों से पूर्व यह प्रथा थी कि जब भी इस प्रकार का कोई प्राकृतिक प्रकोप होता था, तो केन्द्र से एक जांच दल आता था, उसकी सिफारिशों पर ही संबंधित प्रदेश को धनराशि प्रदान की जाती थी राहत कार्यों के लिए, लेकिन जब से 9वें वित्त आयोग की सिफारिश आई है हिमाचल जैसे प्रदेश और बाकी पहाड़ी प्रदेश, जो कि केन्द्र पर आर्थिक सहायता के लिए निर्भर है, उनके लिए एक समस्या उत्पन्न हो गयी है। उनके लिए मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहता हूं कि यह जो नई प्रथा चली है, इसको समाप्त किया जाए। उदाहरणतः हिमाचल प्रदेश को आज कुल मिलाकर उसकी जनसंख्या के आधार पर 18 करोड़ रुपया दिया जाता है और वह भी उस शर्त पर दिया जाता है कि उसका एक चौथाई, अर्थात साढ़े चार करोड़ का प्रावधान हिमाचल सरकार को करना पड़ता है। तभी वास्तविक धन जो यहां से आता है वह 18 करोड़ के लगभग बैठता है। आप स्वयं अनुमान लगाएं कि जहां ढाई करोड़ से ऊपर नुकसान हो गया है वहां यह 18 करोड़ रुपया क्या करेगा? इसलिए मैं मांग करना चाहूंगा कि इस प्रकार की राहत को बंद किया जाए और जो सही मायनों में वहां नुकसान हुआ है, उसके आधार पर राहत प्रदान की जाए।

दूसरा, महोदय, जो आज रिवेन्यू रिलीफ मेन्युअल है, उसके अंतर्गत राहत देने के भी विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न मापदंड हैं। उदाहरणतः हिमाचल प्रदेश में अगर 18 वर्ष से कम आयु का कोई व्यक्ति मर जाए, चाहे उसकी उम्र 17 वर्ष 11 महीने की हो, तो केवल साढ़े छः हजार रुपया दिया जाता है और अगर 18 वर्ष से ऊपर की आयु हो तो पच्चीस हजार दिया जा रहा है। तो मैं यह भी आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहूंगा कि सारे देश के लिए समान कानून बने और जो रिवेन्यू रिलीफ मेन्यूअल है वह सारे देश के लिए समान होना चाहिए ताकि एक तरह की राहत सब लोगों को मिले।

आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। धन्यवाद।

Relief and rehabilitation Tor flood-affected people of Bihar

श्री जलालुद्दीन अंसारी (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, बिहार में अभी हाल में नदियों में बाढ़ आ जाने से बिहार के बड़े हिस्से में आम जनता का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है, मकान भी गिरे हैं, फसल बर्बाद हो गई है, कुछ गांवों का कटाव हुआ है, उनके पुनर्वास का सवाल है। वहां की सरकार यथासंभव जो कर सकती है, कर रही है लेकिन इस विपत्ति में जो राहत कार्य, बचाव कार्य और सहायता के जो साधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए, उसके लिए बिहार सरकार के पास साधन नहीं है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि अपवाद को छोड़कर बिहार के उत्तरी हिस्से में प्रतिवर्ष बाढ़ आती है और बिहार के दक्षिणी हिस्से में आम तौर पर सूखा रहता है। यह नियति बन गई है बिहार की कि एक बड़ा हिस्सा, उत्तरी बिहार, बाढ़ से पीड़ित है और दक्षिणी बिहार सूखे से पीड़ित है। आप जानते हैं कि बिहार में नदियों की कमी नहीं है। गंगा में बाढ़ आ जाती है, सोन नदी में बाढ़ आ जाती है, पुनपुन, गंडक, कोसी इन तमाम नदियों का जल-स्तर जब ऊपर आ जाता है तो बिहार जल-मग्न हो जाता है। उस समय जन-जीवन कितना कष्टकर हो जाता है, इसका अंदाजा

नहीं लगाया जा सकता है और यह कोई एक साल की बात नहीं है। हम केन्द्र सरकार और राज्य सरकार, जो वहां रही हैं, उनसे मांग करते रहे हैं कि बिहार को सूखे और बाढ़ से छुटकारा दिलाने के लिए बाढ़ नियंत्रण सह सिंचाई परियोजनाएं बनाई जाएं। बिहार ने इसके लिए केन्द्र सरकार का भी बराबर ध्यान आकर्षित किया कि बाढ़ नियंत्रण सह सिंचाई परियोजनाएं अगर बना दी जाएं, नदियों को बांध दिया जाए, उनसे नहरें निकाली जाएं, रिज़र्वायर बना दिए जाएं तो सिंचाई के स्थाई प्रबंध हो जाएंगे और सूखा खत्म हो जाएगा। रिज़रवॉयर बना देने से और नदियों को बांध देने से यह जो बाढ़ की विभीषिका आती है, इससे स्थाई छुटकारा हो जाएगा। लेकिन बिहार जैसे प्रदेश की ओर आज़ादी के बाद के 47 सालों में केन्द्र सरकार ने ध्यान नहीं दिया, न पूर्ववर्ती सरकारों ने ध्यान दिया और पूरा बिहार बाढ़ और सूखे की विभीषिका से जूझता रहता है और वहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त रहता है। इसलिए मेरा सुझाव है कि तत्काल केन्द्र सरकार बाढ़ पीड़ितों को राहत मुहैया करने के लिए और उनके पुनर्वास के लिए और मवेशियों के लिए चारे का प्रबंध करने के लिए आवश्यक मदद बिहार सरकार को दे।

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि जैसी कि मैंने अभी चर्चा की कि बिहार को बाढ़ और सूखे से मुक्ति मिल सके और बिहार इन विपत्तियों से मुक्त होकर खुशहाल बन सके, इसके लिए बाढ़ नियंत्रण सह सिंचाई योजना का खाका बनकर पड़ा हुआ है, उस पर अमल करना चाहिए। हमारा पड़ोसी देश है नेपाल, उससे भी कई बार राय-सलाह ली गई लेकिन उसको कार्यान्वित करने के लिए केन्द्र सरकार को ध्यान देना चाहिए, वह नहीं दिया गया है। मेरा अनुरोध है कि इस ओर केन्द्र सरकार ध्यान दे।

ये चंद बातें बाढ़ से उत्पन्न स्थिति के संबंध में और उससे छुटकारा पाने के संबंध में मैंने आपके सामने रखी हैं। मैं आशा करता हूं कि सरकार इस पर विचार करके कुछ ठोस कदम उठाएगी ताकि बिहार की जनता को हर साल जो इस विपत्ति को भुगतना पड़ता है, उससे मुक्ति मिल सके।

شری جلال الدین انصاری "بہار" آپ سبھا ادھیکش مہودے - بہار میں ابھی حال میں ندیوں میں باڑھ آجانے سے بہار کے بڑے حصّہ میں عام جنتا کا جیون است ویست ہو گیا ہے - مکان بھی گرے ہیں - فصل برباد ہو گئی ہے - کچھ گاؤں کا کٹاؤ ہوا ہے - ان کے پنرواس کا سوال ہے - وہاں کی سرکار یتھا سمبھو جو کر سکتی ہے - کر رہی ہے - لیکن اس دِشا میں جو راحت کاریئے - بچاؤ کاریئے اور سہائتا کے جو سادھن اپلبدھ کرائے جانے چاہیئے - اس کے لئے بہار سرکار کے پاس سادھن نہیں ہیں - میں آپ کو یہ بتانا چاہتا ہوں کہ اپواد کو چھوڑ کر بہار کے اتری حصّہ میں پرتی ورش باڑھ آتی ہے - اور بہار کے دکشن حصّے میں عام طور پر سوکھا رہتا ہے - یہ نیتی بن گئی ہے - بہار کی ایک بڑا حصّہ - اتری بہار - باڑھ سے پیڑت ہے اور دکشنی بہار سوکھے سے پیڑت ہے - آپ جانتے ہیں کہ بہار میں ندیوں کی کمی نہیں ہے - گنگا میں باڑھ آجاتی ہے - سون ندی میں باڑھ آجاتی ہے - پن پن، گنڈک، کوسی ان تمام ندیوں کا جل استر جب اوپر آجاتا ہے تو بہار جل مگن ہو جاتا ہے - اس سمے جن جیون کتنا کشٹ کر ہو جاتا ہے - اس کا اندازہ نہیں لگایا جا سکتا ہے - اور یہ کوئی ایک سال کی بات نہیں ہے - ہم کیندریہ سرکار

*† []Trans)iteration in Arabic Script,

اور راجیہ سرکار جو وہاں رہی ہے اُن سے مانگ کرتے رہے ہیں کہ بہار کو سوکھے اور باڑھ سے چھٹکارا دلانے کے لئے باڑھ نیتوں سے سینچائی پری یوجنائیں بنائی جائیں۔ بہار نے اس کے لئے کیندریہ سرکار کا بھی برابر دھیان آکرشت کیا کہ باڑھ نینترن سے سینچائی پری یوجنائیں اگر بنا دی جائیں۔ ندیوں کو باندھ دیا جائے۔ اُن سے نہریں نکالی جائیں۔ رزروائر بنا دئے جائیں۔ تو سینچائی کے استھائی پربندھ ہو جائیں گے۔ اور سوکھا ختم ہو جائے گا۔ رزروائر بنا دینے سے اور ندیوں کو باندھ دینے سے یہ جو باڑھ کی وبھیشیکا آتی ہے۔ اس سے استھائی چھٹکارا ہو جائے گا۔

لیکن بہار جیسے پردیش کی طرف آزادی کے ۴۷ سالوں میں کیندریہ سرکار نے دھیان نہیں دیا۔ نہ پوروورتی سرکاروں نے دھیان دیا اور پورا بہار باڑھ اور سوکھے کی وبھیشیکا سے جوجھتا رہتا ہے اور وہاں کا جیون استِ ویست رہتا ہے۔ اس لئے میرا سجھاؤ ہے کہ تتکال کیندریہ سرکار باڑھ سے پیڑتوں کو راحت مہیا کرنے کے لئے اور اُن نے پشوؤں کے لئے اور مویشیوں کیلئے چارے کا پربندھ کرنے کے لئے آوشیک مدد بہار سرکار کو دے۔

میرا دوسرا سجھاؤ یہ ہے کہ جیسی کہ میں نے ابھی چرچا کی کہ بہار کو باڑھ اور سوکھے سے مکتی مل سکے اور بہار ان وپتیوں سے مکت ہو کر خوش حال بن سکے اس کے لئے باڑھ نینترن اینوم سینچائی یوجنا کا خاکہ بن کر پڑا ہوا ہے۔ اس پر عمل کرکے ہیئے۔ ہمارا جو پڑوسی دیش ہے نیپال۔ اس سے بھی کئی بار رائے صلاح لی گئی ہے۔ لیکن اس کو کاریونت کرنے کے لئے کیندریہ سرکار کو جو دھیان دینا چاہیئے وہ نہیں دیا گیا۔ میرا انورودھ ہے کہ اس اور کیندریہ سرکار دھیان دے۔

یہ چند باتیں باڑھ سے اتپن استھتی کے سمبندھ میں اور اس سے چھٹکارا پانے کے سمبندھ میں میں نے آپ کے سامنے رکھی ہیں۔ میں آشا کرتا ہوں کہ سرکار اس پر وچار کرکے کچھ ٹھوس قدم اٹھائے گی۔ تاکہ بہار کو ہر سال جو اس وپتی کو بھگتنا پڑتا ہے۔ اس سے مکتی مل سکے۔

"ختم شد"

श्री नरेश यादव: महोदय, केन्द्र सरकार की तरफ से फरक्का डैम योजना प्रस्तावित है और इसके लिए किसानों को उनकी भूमि के मुआवजे का भुगतान भी हो गया है। स्थायी निदान के लिए अगर फरक्का डैम योजना चालू कर दी जाए केन्द्र सरकार द्वारा तो बहुत बड़ा हल बाढ़ समस्या का हो सकता है बिहार के लिए। इसी की साथ में जलाहीन अंसारी जी के साथ अपने को सम्बद्ध करता हूं।

Undue delay In releasing quota for medical students of North-Eastern region

DR. B.B. DUTTA (Nominated): Mr. Vice-Chairman, Sir, 1 would like to draw the attention of the "House to a serious malady that seems to afflict our Union Health Ministry. Because of that, it is also affecting the fate of a good number of students who have been selected for admission into various medical colleges.

Mr. Vice-Chairman, as you are aware, in our country the States which have not got a medical institution of their own within their jurisdiction are allotted a certain number of seats elsewhere every year by a quota system and it is the Union Health Ministry which releases the quota. But it has become a disease that every year the release of the quota is delayed, inordinately delayed. This year, till the last Friday, when I came back from my place, till then, they had not got the quota. The students have appeared for tests and interviews. They have been selected. They have also been told that i;' they are going in for the medical line, they have to abandon the engineering and other lines and they cannot apply for the other lines, If they have been selected for the other lines then they have to forego their chance. When ultimately the quota is released, some of the students from those backward, sensitive, areas go to the principal of the medical institution concerned who says, "You are too late to report to the institution. The classes have started. You cannot cope with it. So go back." In this way, every year, some seats get lost. Already the seats these States get are much less than the requirement. There is a lot of frustration, quarrel, over seat allotment. On top of all that, this delay is creating a lot of problems. Another thing is, corruption creeps in. When these institutions do not fill the seats from the quota, what do they do? They sell the seats to other people. They deny seats to the rightful candidates on the plea that they have come late and sell the seats to some other people.

So, Mr. Vice-Chairman, my earnest appeal is this. Let a communication from this House go to the Union Health Ministry to the effect that the quota for this year should be promptly released tomorrow itself and henceforth, the delay should not recur. Ths delay is avoidable. It is a matter of simple administration. They can do it very well in time. It should not recur.

Secondly, they should seriously consider increasing the number of seats for these backward States.

We should not play with the career of our boys and girls. We have already got a lot of problems in those areas. So, kindly take note of this point, Mr: Vice-Chairman.

SHRI JOHN F. FERNANDES (Goa): Mr Vice-Chairman, while associating myself with what Dr. Dutta has said, I want to say something. Fifty per cent of the seats are reserved for all-India students. There is a fraud, as Mr. Dutta has rightly pointed out and this fraud is there in my State also. Some people are kept on the waiting list. If the Central students do not come, these seats should go to those students. These students in combination contribute something. But the people in Delhi delay the allocation of seats. I think there should be some investigation into the inordinate delay so much so that the deserving students are not deprived of the seats. I very much agree with my hon. colleague. I demand that an inquiry should be conducted as to why there is such an inordinate delay of three *to* four months.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Minister, would you like to respond? If you are interested, you may respond.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (SHRI PABAN SINGH GHATOWAR): Sir, I share the